Topic 19

Date
Page

## समानाधिकरण कर्मधारय समास -।

उपमान वाचक सुबन्त का साधारण धर्मवाचक (उपमेय) सुबन्त के साथ समास होता है और उस समास को तत्पुरुष कहते हैं। उदाहरण के लिए घन इव श्याम: (मेघ के समान श्यामवर्ण वाला) में उपमान 'घन' है और साधारण धर्मवाचक श्याम। अत: प्रकृत सूत्र से 'घन सु' और श्याम सु' में समास होकर घनश्याम: रूप बनता है।

विशेषणं विशेष्येण बहुलम्। भेदकं भेद्येन समानाधिकरणेन बहुलं प्राग्वत्। नील उत्पलम् — नीलोत्पलम्। बहुलग्रहणात् क्वचिन्नित्यम् - कृष्ण - सर्प:। क्वचिन्न - रामो जामदग्न्य:।

विशेषणवाची सुबन्त का समानाधिकरण वाले विशेष्यवाची सुबन्त के साथ बहुलता से समास होता है और उस समास को 'तत्पुरुष' कहते हैं। 'बहुलता से' कहने से समास कभी होता है और कभी नहीं भी। उदाहरणम् 'नीलम् उत्पलम् (नील कमल

में 'नीलम' विशेषण है और उत्पलम् विशेष्य। दोनों में ही प्रथमा विभक्ति होने से समानाधिकरणता भी है। अतः प्रकृत सूत्र से समास हो 'नीलोत्पलम्' रूप बनता है। इसी प्रकार 'कृष्ण सु सर्प सु' – इस अलौकिक विग्रह में भी समास हो 'कृष्णसर्पः (कालासाँप) रूप सिद्ध होता है। किन्तु कभी-कभी समास नहीं भी होता है। उदाहरण के 'रामो जामदग्न्यः' में विशेष्य और विशेषण दोनों ही हैं और साथ ही समानाधिकरणता भी है। किन्तु फिर भी समास नहीं होता।

पूर्वापरप्रथमचरमजघन्यसमान-मध्यमध्यमवीराश्च। पूर्वनिपातनियमार्थमिदम्। पूर्ववैयाकरणः। अपराध्यापकः। अपरस्यार्धे पश्चभावो वक्तव्यः' अपरश्चासौ वर्षश्च पश्चार्धः। कथम् 'एकवीरः' इति। 'पूर्वकालैक – इति बाधित्वा परत्वादनेन समासे 'वीरैकः' इति हि स्यात्। बहुलग्रहणाद् भविष्यति।

श्रेण्यादयः कृतादिभिः।

'श्रेण्यादिषु च्व्यर्थवचनं कर्तव्यम्'

अश्रेणयः श्रेणयः कृताः श्रेणिकृताः

क्तेन नञ्विशिष्टेनानञ् । नञ्विशिष्टेन कृतेनाकृतं समस्यते ।
कृतं च तदकृतं च कृताकृतम् ।
। शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योप संख्यानम् । शाकप्रियः पार्थिवः
शाकपार्थिवः । देवब्राह्मणः ।
सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः
सद्वैद्यः । वक्ष्यमाणेन महत आकारः ।
महावैयाकरणः । पूज्यमानैः किम् - उत्कृष्टो गौः पङ्कादुद्धृत इत्यर्थः । वृन्दारकनाग-
कुञ्जरैः पूज्यमानम् । गोवृन्दारकः ।
व्याघ्रादेराकृतिगणत्वादेव सिद्धे सामान्य-
प्रयोगार्थं वचनम् ।